व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।

आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः ।।13।।

अन्वय व्यूढोरस्कः वृषस्कन्धः शालप्रांशुः महाभुजः आत्मकर्मक्षमं देहं आश्रितः क्षात्रः धर्म इव (स्थितः)।

अनुवाद चौड़ी छाती वाले, बैल के समान उठे हुए कन्धों वाले, शालवृक्ष के समान (कद में) ऊंचे तथा लम्बी भुजाओं वाले दिलीप ऐसे लगते थे मानों स्वयं क्षत्रिय धर्म ने अपने कर्त्तव्य के अनुरूप शरीर धारण कर लिया हो।

टिप्पणियां

विशेष 13 से 15 श्लोकों तक महाराज दिलीप के व्यक्तित्व का वर्णन है। पौराणिक परम्परा के अनुसार एक कल्प में चौदह मनु होते हैं। यहां वर्णित वैवस्वत मनु सातवें मनु हैं जिन्हें सत्यव्रत भी कहा गया है। वर्तमान मानव जाति के जनक यही मनु कहे जाते हैं। ये अयोध्या के संस्थापक तथा प्रथम राजा भी माने जाते हैं।

व्यूढोरस्कः व्यूढं उरः यस्य सः व्यूढोरस्कः (बहुव्रीहि)। व्यूढत्रवि उपसर्ग वह् धातु ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' से व्यूढोरस्कः में कप् का आगम। विशाल छाती वाला।

वृषस्कन्धः वृषस्य स्कन्ध इव यस्यः सः (बहुव्रीहि)। वृष के समान दृढ़ तथा उभरे हुए उन्नत कन्धों वाला।

शालप्रांशुः शाल इव प्रांशु (उपमितकर्मधारय)। शाल नामक वृक्ष के समान प्रांशु-लम्बा।

आत्मकर्म दुर्बल एवं पीड़ित व्यक्तियों की रक्षा करना क्षात्र धर्म है। देखिये **''क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रुढः''** (रघुवंश)। परन्तु क्षात्र धर्म का पालन वही कर सकता है जो बलिष्ठ हो और लम्बे चौड़े परिपुष्ट शरीर को धारण करता

हो जैसे दिलीप थे। अतएव कवि कल्पना करता है दिलीप के चौड़े वक्षस्थल, चौड़े उन्नत स्कन्ध और लम्बे शरीर को देखकर प्रतीत होता था मानो दुर्बलों और पीड़ितों की रक्षा करने के लिए क्षात्र धर्म ही साक्षात् दिलीप के शरीर में अवतरित हो गया हो। इसी प्रकार भगवान राम को मूर्तिमान धर्म माना गया है: **''रामो विग्रहवान् धर्मः।''**

महाभुजौ महान्तौ भुजौ यस्य सः (बहुव्रीहि)। विशाल (महान्) बाहों वाला।

क्षात्रः- क्षत्रस्य अयमिति क्षात्रः। क्षत्र अण्।